SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

यशपाल के उपन्यासों में राजनीतिक चेतना की वर्तमान प्रासंगिकता

शालिनी माहेश्वरी, (Ph.D.), हिन्दी विभाग,
राजकीय महाविद्यालय पहाड़ी, भरतपुर, राजस्थान, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Author
शालिनी माहेश्वरी, (Ph.D.), हिन्दी विभाग,
राजकीय महाविद्यालय पहाड़ी,
भरतपुर, राजस्थान, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 26/10/2022
Revised on : -----
Accepted on : 02/11/2022
Plagiarism : 00% on 26/10/2022

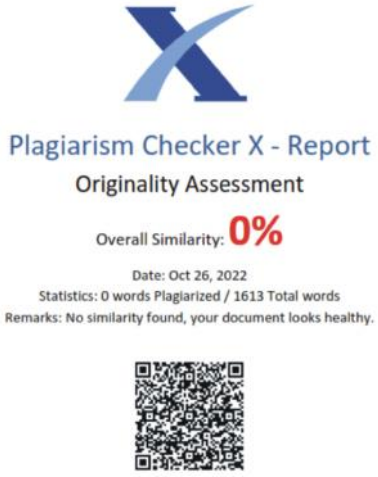

शोध सार

यशपाल हिन्दी के पहले ऐसे उपन्यासकार, विचारक है, जिन्होंने बेलाग स्वर में साहित्यिक प्रतिष्ठान या हिन्दी के लिटरेरी एस्टेब्लिशमेण्ट को साम्यवादी विचारधारात्मक चुनौती दी। प्रेमचंद भी यह काम नहीं कर सके क्योंकि वह बहुत धीमी गति से वर्ग संघर्षपरक और कम्युनिस्ट नजरिये तक पहुँच पाए थे। 'गोदान' में उनकी साम्यवादी समझ का स्पष्ट बोध मिलता है। लेकिन प्रेमचंद जनजीवन की तस्वीरें आँकते हैं,लोगों को वैसा ही दिखाते हैं, जैसे वह होते हैं या हो रहे होते हैं। इसके विपरीत यशपाल घोषित रूप में विचारधारात्मक औपन्यासिक लेखन करते हैं। उनके 'दादा कामरेड', 'पार्टी कामरेड', 'देशद्रोही', 'झूठा सच', 'मेरी–तेरी उनकी बात' स्पष्टतः राजनैतिक उपन्यास हैं। यशपाल राजनीतिक पृष्ठभूमि को अपने उपन्यासों में केन्द्रीय स्थान देते हैं। वे भारत के उस राजनैतिक दौर को अंकित करते हैं, जो 1935–36 से शुरू होता है, जब कांग्रेस के वामपक्षी दल सुदृढ़ हो रहे थे। 'दादा कामरेड' में उन्होनें मजदूर–वर्ग की क्रांति, 'देशद्रोही' में 1939–1942 तक के आन्दोलन, 'पार्टी कामरेड' में नाविक विद्रोह, 'झूठा सच' में 1947 में भारत–विभाजन तथा अपने अंतिम 'मेरी तेरी उसकी बात' उपन्यास में उन्होंने 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन की पृष्ठभूमि को आधार बनाया है। इस प्रकार स्पष्ट है कि यशपाल के अधिकतर उपन्यासों की पृष्ठभूमि राजनीतिक चेतना ही है जिसको व्यक्त करने के लिए उन्होंने उपन्यासों की रचना की है।

मुख्य शब्द

यशपाल, हिन्दी साहित्य, राजनीति.

यशपाल के अधिकांश उपन्यासों में सामाजिक समस्याओं का चित्रण होते हुए भी राजनीति का स्वर प्रधान है। उनमें राजनीतिक समस्याओं, नीतियों, आंदोलनों और विचारों की खुलकर अभिव्यक्ति हुई है। कथानक भी

राजनीतिक घटनाओं से संबंधित हैं। उनके उद्देश्य भी राजनीतिक घटनाओं से सम्बन्धित हैं। उनके उद्देश्य भी राजनीतिक दृष्टिकोण से अनुप्राणित है और अंत भी इसी दृष्टि से किये गये हैं। यथाः 1. दादा कामरेड 2. देशद्रोही 3. पार्टी कामरेड 4. झूठा सच 5. मेरी–तेरी उसकी बात 6. दिव्या। यशपाल के साहित्य में स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व और स्वातंत्रोत्तर भारत के विशाल राजनीतिक परिवेश की अभिव्यक्ति मिलती है। इस काल के अनेक मतवादों एवं घटनाओं का निरूपण ही नहीं अपितु इस तद्युगीन समाज में राजनीति को लेकर सारी हलचल का भी सफल आंकलन यशपाल के साहित्य में हुआ है। दीर्घकाल की विदेशी सत्ता से भारत को हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के रूप में मिला बँटवारा, सांप्रदायिक दंगे, मारकाट, लूटमार, हृदयद्रावक वीभत्स एवं रोंगटे खड़े कर देने वाली घटनाओं के बीच स्वतंत्रता का प्राप्त होना, राष्ट्रपिता की नृशंस हत्या और फिर स्वतंत्रता संग्राम के वीरों अर्थात् भारत के नेताओं की निष्ठा, आत्म–बलिदान एवं तपस्या आदि का एकाएक तिरोभाव हो जाना और उसके साथ ही देश का भविष्य अंधकारमय हो जाना इन सब घटनाओं की कापी हैः यशपाल का साहित्य। यशपाल ने जागरण काल में अनेक समस्याओं से जूझ रहे मजदूरो को देखा था। इनकी जिन्दगी में अभावों के ढेर हैं, यातनाओं के संकट हैं उनकी अनुभूति की और संवेदनाओं के स्तर पर उन्हें अभिव्यक्ति दी। यशपाल के सभी उपन्यासों में दिशाहीन स्वार्थपरता का चित्रण बड़े ही विस्तार के साथ किया गया है। लेखक ने देश की सभी प्रमुख विचारधाराओं और उनके दलों का चित्रण बड़े ही विस्तार के साथ किया है।

यशपाल के अधिकांश उपन्यासों में सामाजिक समस्याओं का चित्रण होते हुए भी राजनीति का स्वर प्रधान है। उनमें राजनीतिक समस्याओं, नीतियों, आंदोलनों और विचारों की खुलकर अभिव्यक्ति हुई है। कथानक भी राजनीतिक घटनाओं से संबंधित हैं। उनके उद्देश्य भी राजनीतिक घटनाओं से सम्बन्धित हैं। उनके उद्देश्य भी राजनीतिक दृष्टिकोण से अनुप्राणित है और अंत भी इसी दृष्टि से किये गये हैं। यथा – 1. दादा कामरेड 2. देशद्रोही 3. पार्टी कामरेड 4. झूठा सच 5. मेरी–तेरी उसकी बात 6. दिव्या।

1. **दादा कामरेडः** इस उपन्यास की कथावस्तु का चयन 1930 के आसपास की राजनैतिक गतिविधि और घटनाओं से किया गया है। 1930 के आस–पास क्रांतिकारी दल बिखर गया था। उसके कार्यकर्त्ताओं में से अधिकांश व्यक्तियों को फाँसी दे दी गई थी या उन्हें आजीवन कारावास दे दिया गया था। उनमें से कुछ व्यक्ति मौन और निष्क्रिय हो गये थे, शेष लोग कम्युनिस्ट पार्टी में शामिल होकर समाजवादी विचारों की ओर झुकने लगे थे। यशपाल ने सन् 1930–36 के आस–पास की इस राजनैतिक गतिविधि को ही कथा का मुख्य आधार बनाया है। उस समय ''हिन्दुस्तान का मजदूर–वर्ग अपने विकास की प्रारंभिक अवस्था में था। इतनी जल्दी वह नेताओं के अभाव को पूरा न कर सकता था। नतीजा यह हुआ कि आर्थिक संकट के उन वर्षों में हड़तालों में बार–बार मजदूरों की हार हुई और राष्ट्रीय आन्दोलन के नाजुक वर्षों में भी मजदूर–वर्ग अपनी भरपूर शक्ति से राजनीतिक काम नहीं कर सका।''[1] यशपाल ने इस स्थिति को 'दादा कामरेड' में दिखाने का प्रयत्न किया है। रजनी पामदत्त के अनुसार ''मिल–मजदूरों की हड़ताल को देखकर रेलवे–मजदूरों में भी नयी जागृति दिखाई दे रही थी। मजदूर–वर्ग साम्राज्यवाद के काले कारनामों के खिलाफ जबरदस्त राजनैतिक प्रदर्शन करके, राष्ट्रीय आन्दोलन की माँगों का समर्थन करके और साम्राज्यवादी दमन के खिलाफ आये दिन मोर्चा लेकर मजबूत अंग के रूप में जनता के सामने आ रहा था।''[2] 'दादा कामरेड' में भी उपन्यास का नायक हरीश यही सोचता है कि 'मजदूर की इस विशाल शक्ति को, जो आकाश में गरजने वाली बिजली की तरह दुर्दमनीय है, कैसे संगठन के तार द्वारा क्रांति के उपयोग में लाया जा सकता है।'[3] 'दादा कामरेड' में यशपाल ने क्रांतिकारियों के जीवन को अपने व्यक्तिगत अनुभवों के आधार पर यथातथ्य रूप देने का प्रयास किया है।
2. **देशद्रोहीः** 'देशद्रोही' उपन्यास की कथावस्तु भी राजनैतिक पीठिका पर अवलंबित है। इस उपन्यास की कथावस्तु सन् 1942 के भारतीय स्वतंत्रता संग्राम तथा कम्युनिस्ट पार्टी की गतिविधियों से संबंधित है। 1942 का आंदोलन अन्य आंदोलन की अपेक्षा अधिक सबल और महत्वपूर्ण था, क्योंकि 1939 में द्वितीय विश्वयुद्ध आरम्भ हो गया था। ब्रिटेन ने जर्मनी के विरूद्ध युद्ध की घोषणा कर भारत को भी उसमें सम्मिलित कर लियाा था। कांग्रेस इस पक्ष में नहीं थी। इस कारण उस समय बहुत हड़तालें और युद्ध विरोधी प्रदर्शन हुआ करते

थे। ऐसे समय में ही जर्मनी ने रूस पर हमला कर दिया था। उस समय कम्युनिस्ट पार्टी इस युद्ध को लोक–युद्ध कहकर अंग्रेजों की समर्थक हो गयी थी। ब्रिटेन तथा रूस में समझौता हो गया था। भारत की कम्युनिस्ट पार्टी ने भी अंग्रेजों की सहायता करना प्रारम्भ कर दिया था परन्तु गाँधी जी ने इसे उपयुक्त अवसर समझकर अंग्रेजीं के विरूद्ध 'भारत छोड़ो'का नारा दिया। इसे अंग्रेजों ने अस्वीकार कर दिया था तब 1942 का आंदोलन आरम्भ हुआ था। सन् 1942 में देश की इन्हीं घटनाओं को आधार बनाकर यशपाल ने कम्युनिस्ट पार्टी की युद्ध–समर्थन नीति के औचित्य को सिद्ध करते हुए उसे मजदूर आंदोलन का रूप देने का प्रयास किया है जबकि सारा देश कम्युनिस्टों को देशद्रोही कहता था, तब उन्होंने कम्युनिस्टों को उचित सिद्ध करने . . . . . [4] यहाँ कहा जा सकता है कि इस उपन्यास के कथा के मूल स्त्रोत कांग्रेस की गाँधीवादी नीति तथा कम्युनिस्ट पार्टी की नीति और उसके सिद्धान्त हैं।

3. **गीता (पार्टी कामरेड):** 'गीता' उपन्यास का कथानक भी राजनैतिक क्षेत्र से गृहीत है। इसका संबंध सम्पूर्ण देश की राजनीति से नहीं, बल्कि एक दल की राजनीति से है वह दल है भारत की कम्युनिस्ट पार्टी। यशपाल ने 'पार्टी कामरेड' की कहानी को पाठकों के चारों ओर मौजूद 'परिस्थितियों की कहानी' कहा है। ये परिस्थितियाँ मुख्य रूप से राजनैतिक परिस्थितियाँ ही हैं। उपन्यास की पृष्ठभूमि घर की चाहरदीवारी से लेकर सन् 1945 की राजनैतिक गतिविधि और बम्बई के नाविक विद्रोह तक विस्तृत है। कम्युनिस्ट पार्टी की कार्यप्रणाली, चुनाव जीतने के लिए पार्टियों के हथकंडे तथा हड़ताल और नाविक विद्रोह के समय साम्राज्य विरोधी प्रदर्शन आदि घटनाएँ ही कथानक का मूलाधार हैं।

4. **झूठा–सचः** यशपाल के राजनीति–प्रधान उपन्यासों में सबसे प्रभावशाली और वृहदाकार पृष्ठभूमि इस उपन्यास की है। इसकी पृष्ठभूमि अत्यन्त विस्तृत है परन्तु यथार्थ पर आधारित है। इस उपन्यास में 1947 में भारत–विभाजन के समय की उस लोमहर्षक राजनैतिक घटना को आधार बनाया गया है जो अत्यन्त हृदय–विदारक और मार्मिक है। भारत–विभाजन के पूर्व हिन्दू–मुसलमानों के साम्प्रदायिक झगड़े, भीषण नरसंहार, सम्पूर्ण नारी जाति का अपमान और भारत–विभाजन के पश्चात् भारत की कांग्रेसी नीति तथा धाँधलेबाजी आदि सूत्रों से कथा का निर्माण किया गया है। 'झूठा सच' की मूल कथा का चयन, यथार्थ से अनुप्रमाणित राजनीतिक तथा सामाजिक जीवन से किया गया है। लाहौर के मध्यवर्गीय समाज को उसकी संपूर्णता में ग्रहण किया गया है लेकिन इस उपन्यास का मूलाधार राजनैतिक घटना और राजनैतिक गतिविधि ही है।

5. **मेरी तेरी उसकी बातः** इस उपन्यास में सामाजिक–राजनीतिक परिवर्तन की स्थितियों के साथ जनचेतना को अंकित किया गया है। सन् 1942 का 'भारत छोड़ो आंदोलन' उपन्यास का महत्वपूर्ण भाग है। जैसे–जैसे उपन्यास आगे बढ़ता है, युगीन सामाजिक और आर्थिक शक्तियाँ सामने आती हैं और अमर कांग्रेस समाजवादी दल के निकट हो जाता है। लेखक ने इस उपन्यास में राजनैतिक परिदृश्य को अंकित करने की जो कोशिश की है, उसमें महात्मा गाँधी की वर्ग सहयोगवादी नीति पर प्रहार है। यशपाल ने स्पष्ट किया कि युवा वर्ग गलत बातों पर समझौते नहीं करता है। उसके विचार भावुकता के शिकार हो सकते हैं, पर अपने विचारों में उसको आस्था है। क्रांति वैयक्तिक प्रश्न नहीं और केवल वैयक्तिक प्रयत्न से क्रांति सम्भव नहीं है। मूलगामी परिवर्तन निरंतर संघर्ष और संगठित प्रयासों से ही सम्भव है। इस कृति में यशपाल सही अर्थों में जन संघर्षों को चित्रित कर पाने में सफल हुए हैं साथ ही वे उन सब लोगों को भी चित्रित करते हैं जो सामाजिक–राजनीतिक संघर्ष में भाग लेते हैं और उनका मोहभंग एक–दो आदमियों का मोहभंग न हो कर एक प्रवृत्ति की ओर संकेत करता है। अवसरवादी और सत्ताधारी राजनीति ने स्वतंत्र भारत में किस प्रकार संघर्ष को विफल कर दिया और विरोध को अर्थहीन बना दिया है, इसका प्रमाण 'मेरी तेरी उसकी बात' में मिलता है।

6. **दिव्याः** दिव्या में यशपाल हमें दो हजार वर्ष पूर्व की अवस्था में ले जाते हैं। मौर्य–काल के छिन्न–भिन्न हो जाने के बाद पतनोन्मुख भारत का वह चित्र प्रस्तुत किया गया है,जबकि बौद्ध–धर्म विकृत हो चुका था और वर्णाश्रम धर्म की पुनः स्थापना हो रही थी। सांस्कृतिक उपन्यास के पीछे सामंतकालीन भारत के सामाजिक

और राजनैतिक जीवन का पूरा विवरण है। कुलों का परस्पर कलह,वर्गों के हितों का परस्पर संघर्ष, बाहरी आक्रमण और इस राजनीति के दाँव–पेंच के पीछे पीड़ित जनता की आर्त पुकार । यहाँ अतीत केवल स्वर्णिम कल्पना और स्वर्ग की वस्तु नहीं है। अतीत में भी आधुनिक युग के सदृश अधिकांश लोग जीवन की सुख–सुविधाओं को प्राप्त करने में असमर्थ थे। अभिजात–वर्ग प्रत्येक रूप में सर्वहारा–वर्ग का शोषण करता था। उस युग के दास–वर्ग की दयनीय और यंत्रणामयी स्थिति और पशु–सदृश होने वाले मानवीय क्रय–विक्रय की प्रथा आदि सामाजिक, राजनीतिक समस्यायें ही इस उपन्यास की मूलाधार हैं।

निष्कर्ष

यशपाल के साहित्य में स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व और स्वातंत्रोत्तर भारत के विशाल राजनीतिक परिवेश की अभिव्यक्ति मिलती है। इस काल के अनेक मतवादों एवं घटनाओं का निरूपण ही नहीं अपितु इस तद्युगीन समाज में राजनीति को लेकर सारी हलचल का भी सफल आंकलन यशपाल के साहित्य में हुआ है। दीर्घकाल की विदेशी सत्ता से भारत को हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के रूप में मिला बँटवारा, सांप्रदायिक दंगे, मारकाट, लूटमार, हृदयद्रावक वीभत्स एवं रोंगटे खड़े कर देने वाली घटनाओं के बीच स्वतंत्रता का प्राप्त होना, राष्ट्रपिता की नृशंस हत्या और फिर स्वतंत्रता संग्राम के वीरों अर्थात् भारत के नेताओं की निष्ठा, आत्म–बलिदान एवं तपस्या आदि का एकाएक तिरोभाव हो जाना और उसके साथ ही देश का भविष्य अंधकारमय हो जाना इन सब घटनाओं की कापी हैः यशपाल का साहित्य। यशपाल ने जागरण काल में अनेक समस्याओं से जूझ रहे मजदूरो को देखा था। इनकी जिन्दगी में अभावों के ढेर हैं, यातनाओं के संकट हैं उनकी अनुभूति की और संवेदनाओं के स्तर पर उन्हें अभिव्यक्ति दी। यशपाल के सभी उपन्यासों में दिशाहीन स्वार्थपरता का चित्रण बड़े ही विस्तार के साथ किया गया है। लेखक ने देश की सभी प्रमुख विचारधाराओं और उनके दलों का चित्रण बड़े ही विस्तार के साथ किया है।

संदर्भ सूची

1. पामदत्त रजनी, *आज का भारत,* पृ0 281।
2. पामदत्त रजनी, *आज का भारत,* पृ0 385–386।
3. दादा कामरेड, पृ0 72।
4. तिवारी सुरेश चन्द्र, *यशपाल और हिन्दी कथा साहित्य,* पृ0 58।

****